पंजीयन संख्या / RNI No.- UPHIN/2017/74660

ISSN: 2581-6985

प्रवासी जगत

प्रवासी जगत का साहित्य, साहित्यकार व संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-3, अंक-2; पौष-फाल्गुन 2076 / जनवरी-मार्च, 2020

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण

(2 फरवरी, 1902 – 6 मार्च, 1995)

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडु ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष भारतीय मूल के दो विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

पंजीयन संख्या / RNI No.- UPHIN/2017/74660 ISSN : 2581-6985
यू.जी.सी. केयर लिस्ट क्र. 222

प्रवासी जगत

प्रवासी जगत का साहित्य, साहित्यकार व संस्कृति केंद्रित पत्रिका
खंड-3, अंक-2; पौष-फाल्गुन 2076 / जनवरी-मार्च, 2020

संरक्षक

डॉ. कमल किशोर गोयनका
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई–मेल: kkgoyanka@gmail.com

परामर्श मंडल

डॉ. वशिनी शर्मा
पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : vashinisharma@gmail.com

डॉ. मीरा सरीन
पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : omeerasarin@gmail.com

श्री सत्यदेव टेंगर
सदस्य, शासी समिति, विश्व हिंदी सचिवालय,
संपादक– आक्रोश, मॉरीशस
ई–मेल : s.tengur@yahoo.com

डॉ. पुष्पिता अवस्थी
Director, Hindi Universe Foundation,
Mount Everest Bhavan
Winterkoning28,1722 CB
Zuid-Scharwoude, The Netherlands
ई–मेल : info@pushpitaawasthi.com

डॉ. सुधा ओम ढींगरा
प्रमुख संपादक, विभोम-स्वर, अमेरिका-भारत
101, गुईमन कोर्ट, मोरिसविल्ले,
एनसी–27560, यू.एस.ए
ई–मेल : sudhadrishti@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार

डॉ. स्वर्ण अनिल
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई–मेल: swarananilkhs16@gmail.com

प्रधान संपादक

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक - प्रो. उमापति दीक्षित
विभागाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : dr.umapati2011@gmail.com

सह-संपादक - डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीना
सहा. प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : dr.jsmeena77@gmail.com

संपादक मंडल

डॉ. सुषम बेदी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, कोलंबिया विश्वविद्यालय,
न्यूयॉर्क
ई–मेल : sb12@columbia.edu

श्री तेजेन्द्र शर्मा
महासचिव, कथा यू.के.
33-A, Spencer Road, Harrow & Wealdstone,
Middlesex, HA37AN (United Kingdom)
ई–मेल : tejinders@live.com/kathauk@gmail.com

डॉ. स्नेह ठाकुर
संपादक–प्रकाशक, वसुधा पत्रिका, कैनेडा
16, Revlis, Crescent, Toronto, Ontario
MIV-IE9, Canada
ई–मेल : dr.snehthakore@gmail.com

प्रो. कुमुद शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ई–मेल : sharma.kumud9@yahoo.com

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा – 282005

पंजीयन संख्या / RNI No.- UPHIN/2017/74660 ISSN : 2581-6985

प्रवासी जगत का साहित्य, साहित्यकार व संस्कृति केंद्रित हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका

-प्रवासी जगत

खंड-3, अंक-2; पौष-फाल्गुन, 2076 / जनवरी-मार्च, 2020

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : विभागाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संपादकीय कार्यालय : अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005
फोन/फैक्स -0562–2530683/684/705
ईमेल -pravasijagat.khsagra17@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत – प्रति अंक ₹ 40 / – , वार्षिक – ₹ 150 / –
संस्थागत – वार्षिक शुल्क ₹ 250 / –
(डाक व्यय प्रति अंक ₹ 35 / – तथा
वार्षिक ₹ 100 / – अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10, वार्षिक $ 40

मुद्रक : **राष्ट्रभाषा ऑफसेट प्रेस, आगरा**

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : **सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा**

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख का नाम	लेखक का नाम	पृ०सं०
•	प्रधान संपादक की कलम से... विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान	**प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय**	5-9
•	संपादकीय	**प्रो. उमापति दीक्षित**	10-14
1.	मॉरीशस के प्रवासी जीवन में लोकसाहित्य की भूमिका	**प्रियंका कुमारी**	15-23
2.	सुधा ओम ढींगरा की काव्यकृति 'सरकती परछाइयाँ' में बिम्बविधान	**रवीन्द्र सिंह**	24-30
3.	प्रवासी जीवन : तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों के संदर्भ में	**डॉ. प्रियंका**	31-37
4.	हिंदी की वैश्विक स्वीकृति : स्वरूप एवं संभावनाएँ	**डॉ. यशोधरा राठौर**	38-44
5.	पुष्पिता अवस्थी की कहानियों में अभिव्यक्त कैरेबियाई प्रवासी जीवन एवं उनका संघर्ष	**अभिनव**	45-54
6.	युद्ध, भूख, दर्द और स्त्री यौन शोषण : क्रोएशिया प्रवास डायरी के झरोखे से	**सदफ इश्त्याक शर्मिला सक्सेना**	55-63
7.	स्त्री विमर्श की गाथा और वैश्विक कहानीकार पुष्पिता अवस्थी का कथा संसार	**डॉ. विशाला शर्मा**	64-69
8.	ब्रिटेन की हिंदी-सेवी संस्थाएँ	**डॉ. विनय कुमार शर्मा**	70-77
9.	प्रवासी जीवन की विसंगतियाँ	**डॉ. प्रणु शुक्ला**	78-83
10.	सुषम बेदी कृत 'मोरचे' उपन्यास में स्त्री विमर्श	**पूनम पाधा**	84-90

11.	ज़किया जुबैरी की 'साँकल' कहानी संग्रह में नारी अस्मिता	**डॉ. पठान रहीम खान**	91-96
12.	जीवन संघर्ष और तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ	**डॉ. नीतू परिहार**	97-105
13.	प्रवासी साहित्य में नीति चिंतन : महाकवि हरिशंकर आदेश	**डॉ. अनुपमा त्रिपाठी** **डॉ. आशुतोष मिश्र**	106-114
14.	संवेदना को मुखरित करती तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ	**डॉ. कीर्ति माहेश्वरी**	115-123
15.	प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में मानव मन : वेदना	**डॉ. वंदना मिश्रा**	124-129
16.	प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी चिंतन	**डॉ. हिमानी भाटिया**	130-134
17.	प्रवासी साहित्य की अवधारणा और प्रवासी हिंदी साहित्य की वर्तमान काव्य स्थिति	**सचिन मिश्र**	135-143
18.	'दूसरी आज़ादी' मानसिक गुलामी की दास्तान	**डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा**	144-148

- लेखकों के नाम और पते
- सदस्यता फाम

❑❑

जीवन संघर्ष और तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ

डॉ. नीतू परिहार

पिछले कुछ समय से प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों को केंद्र में रखकर विचार विमर्श किया जा रहा है। प्रवासी कहने का क्या तात्पर्य है यह भी एक विचारणीय विषय है। अमूमन जो अपने देश से दूसरे देश में जाकर रहते हैं या बस जाते हैं वे प्रवासी कहलाते हैं। "प्रवासी साहित्यकारों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से इतिहास, मिथक, सभ्यता को सुरक्षित रखने का प्रयास किया।"

भारतीय मूल के लोग लगभग समस्त विश्व में फैले हुए हैं। उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मस्थली बनाया है और स्वयं का विकास करने के साथ-साथ भारत देश का नाम भी ऊँचा किया है। विभिन्न क्षेत्रों के साथ-ही-साथ उन्होंने लेखन में भी हाथ अजमाया है। भारतीय विदेशों में भले बस गए हों लेकिन वे अपनी परंपराओं, अपने रीति-रिवाजों, अपनी भाषा को नहीं भूले हैं। विदेशों में रहकर भी लिखा हिंदी में ही। हिंदी में लिखने वाले विदेशों में बसे लेखक प्रवासी हिंदी साहित्यकार व लेखक कहलाये। ये लेखक साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिख रहे हैं। कहानी, उपन्यास, यात्रा वृतांत, कविताएँ आदि सभी में सक्रिय लेखन प्रवासी लेखक कर रहे हैं—हमारे लिए यह अति गौरव की बात है कि हिंदी साहित्य के इतिहास में एक लम्बे अरसे के बाद हिंदी भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार, विस्तार पूरे विश्व में जोर शोर से होने लगा है।"[2]

प्रवासी हिंदी साहित्य ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनेक अनुभव, संवेदनाओं और भावनाओं से हम जुड़ जाते हैं। साथ ही यह भी कि मानवीय संवेदनाओं की देशकाल की मर्यादाएँ नहीं होती। प्रवासी साहित्य में नास्ट्रेल्जिया या परायेपन की अनुभूति दिखाई देती है। व्यक्ति विदेश में

बसता है, नए लोगों से सामंजस्य बनाने की कोशिश करता है। वह अपनी नई पहचान को स्थापित करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहता है।

प्रस्तुत आलेख तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों पर केंद्रित है। तेजेन्द्र जी का जन्म जगराव, पंजाब में हुआ और स्कूली शिक्षा दिल्ली में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम. ए. किया। अंग्रेजी के अलावा हिंदी, पंजाबी, उर्दू तथा गुजराती भाषाओं का भी ज्ञान आपको है। दूरदर्शन पर 1994 में धारावाहिक 'शांति' आपके द्वारा लिखा गया अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। आप के कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। यहाँ आपकी 'श्रेष्ठ कहानियाँ' नाम से प्रकाशित पुस्तक की कहानियों को आधार बनाया गया है।

तेजेन्द्र शर्मा ऐसे कहानीकार हैं जो अपनी कहानियों में अपने अनुभवों का आधार खोजने का प्रयास करते हैं। ये यात्राओं के शौकीन हैं। वे जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ की संस्कृति, आहार-व्यवहार सबको आत्मसात करते जाते हैं। फिर जब कोई कहानी की रचना करते हैं तो अपने अनुभवों का उपयोग उसमें करते हैं। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में जीवन संघर्ष का दर्द तरह-तरह से दिखाई देता है।

'अभिशप्त' कहानी में रजनीकान्त के माध्यम से विस्थापित जीवन की कथा का मर्मस्पर्शी चित्रण है। रजनीकान्त ने गुजराती माध्यम से बी.ए. पास किया किंतु इस डिग्री के आधार पर उसे कोई नौकरी नहीं मिली। अनपढ़ बापू जी तो मजदूरी करते थे पर पढ़े-लिखे बेटे से तो मजदूरी नहीं करवा सकते थे। रजनीकान्त भी चाहता है कि कहीं दूर चला जाऊँ जहाँ कोई न पहचानता हो, ताकि मजदूरी करने में कोई शर्म महसूस न हो। लंदन आकर यही किया उसने। मजदूरी, शादी और घर सब लंदन में है। एक ही दिनचर्या रोज की है। चाहकर भी अपने वतन नहीं जा सकता। बँधा है निशा से, गुलाम की तरह जीवन जी रहा है, बावजूद इसके उसके भीतर का स्वाभिमानी इंसान अभी भी जीवित है फिर भी वह कुछ कर नहीं पाता, सिर्फ सोचता है कि अब यह जीवन नहीं जिया जायेगा और उसे याद आने लगती है—"गाँव की मिट्टी की सुगंध, सरसों के पीले फूल और खेत सभी अपनी तरफ बुला रहे हैं..... मुझे नहीं खाना क्रिकेट बैट वाला केक—मुझे बाजरे की रोटी और पालक का साग ही चाहिए।..... मेरा गाँव मुझे बुला रहा है।"

रजनीकान्त अपने हालात और परिस्थितियों के भँवर में इस तरह फँसा है कि चाहकर भी अपने मन की नहीं कर सकता है। वह 'अभिशप्त' है एकाकी, अजनबीपन और विदेशों में उपेक्षित जीवन जीने के लिए। तेजेन्द्र ने इस कहानी के माध्यम से जीवन के कटु सत्य को उजागर किया है तथा यह बताया कि विदेशों में बसना या वहाँ की दिनचर्या में ढलना प्रत्येक को सुकून की जिन्दगी नहीं दे सकता।

तेजेन्द्र की 'देह की कीमत' कहानी भी बहुत मर्मस्पर्शी है। हरदीप के माध्यम से तेजेन्द्र ने युवाओं का विदशों में कमाए जाने के जुनून को रेखांकित किया है। आजकल के थोड़े भी पढ़-लिख जाने वाले युवा विदेश जाकर कमाने के सपने देखता है। अपने देश में तो कोई छोटा-मोटा काम नहीं करता, विदेशों में वह कुलीगिरी कर लेगा, बर्तन धो लेगा। इस कहानी में भी हरदीप को विदेश जाना है न कोई डिग्री है, न ही कोई परीक्षा पास की फिर भी—"उसे तो किसी भी तरह विदेश जाना था.....बस..... वहाँ जाना था.....पैसा कमाना था और ऐश की जिंदगी जीनी थी।"

इस ऐश की जिंदगी के लिए हरदीप अवैध तरीके से जापान जाता है, दो-तीन साल वहाँ बिताकर पैसे कमाकर वापस आ जाता है। उसे ईलीगल जाने आने में डर नहीं लगता बल्कि वो मानता है—"जब तक रिस्क नहीं लेंगे, तो यह ऐशो-आराम के सामान कैसे जुटाएँगे।"

अवैध तरीके से विदेशों में पहुँचने पर जीवन भी आपको अवैध तरीके से ही जीना पड़ता है। अवैध कर्मचारी को तो रोज के पैसे रोज के काम से कमाने पड़ते हैं वरना वहाँ खाने के भी लाले पड़ जाते हैं। हरदीप बीमारी पर भी काम पर निकला और एक कार की चपेट में आ गया। अब हरदीप अवैध लाश था दोस्तों ने चंदा जमाकर लाश को भारत भेजने की व्यवस्था की तो दूसरी ओर हरदीप के भाई लाश लेने के बहाने टोकियो में बसना चाहते हैं—"दार जी, हम वहाँ वीर जी की जगह टोकियो में रहने का चक्कर चला सकते हैं।"

भाई की मौत से सबक नहीं ले रहे बल्कि अब भी विदेश जाने का मोह रख रहे। भले वहाँ जाने की कीमत भाई का कफन ही हो।

'देह की कीमत' कहानी में तेजेन्द्र शर्मा ने एक और कटु सत्य को रेखांकित किया। हरदीप जब तक जिंदा था तब तक पम्मी उस घर की बहू थी। लेकिन उसके मरने के बाद पम्मी के लिए उस घर में कोई जगह नहीं। पम्मी की सास उसे गालियाँ देती हैं। उसे अपने पति को खा जाने वाली कहती हैं। लाश को भारत भेजने के लिए एकत्र किए पैसे भी वो खुद रखना चाहती है। जब उसे लगता है कि पैसे उसे नहीं मिलेंगे तो वह पम्मी को छोटे बेटे के साथ चादर ओढ़ा कर घर में रखने की बात करती है—"औरत के ऐसे स्वार्थी चेहरे को तेजेन्द्र ने बड़ी ही कुशलता से उकेरा है।"[7]

'पासपोर्ट का रंग' कहानी में भी अपने देश जाने की छटपटाहट दिखाई देती है। पंडित गोपालदास त्रिखा, पत्नी की मृत्यु के बाद अपने इकलौते पुत्र के पास लंदन आ गए। लंदन आए तो खुशी थी किसी अपने के साथ रहने की लेकिन अब लंदन उन्हें पराया लगने लगा है। वे लंदन में रह तो रहे हैं किंतु उन्हें अपना देश, अपना

हिन्दुस्तान बहुत याद आता है। जब उन्हें ब्रिटिश पासपोर्ट मिल रहा है, पासपोर्ट मिलने से पहले ब्रिटेन की महारानी के प्रति वफादारी की कस्में खानी पड़ी तो वे अपने आप को धिक्कारते हैं और अपने बेटे से कहते हैं—"बेटा तू नहीं समझ सकता मेरे लिए ब्रिटेन की नागरिकता लेने से मर जाना कहीं बेहतर है। मैंने अपनी सारी जवानी इन गोरे साहबों से लड़ने में बिता दी, जेलों में रहा।"

गोपालदास को बहुत बुरा लगता है कि जिन अंग्रेजों ने हम पर जुल्म किया, जिन्होंने बँटवारा करवाया उसी देश की महारानी के प्रति हम वफादारी की कस्में खा रहे हैं। कैसी बिडंबना है अपने देश का भी वीजा लेना पड़ रहा है। गोपालदास जी को अपनी नागरिकता बदलना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वे अपने बेटे से पूँछते हैं—"क्या कोई ऐसा तरीका नहीं हो सकता कि मैं हिन्दुस्तान का नागरिक भी बना रहूँ और मुझे तुम अपनी खुशी के लिए ब्रिटेन की नागरिकता भी ले दो?"[9]

तेजेन्द्र की कहानियों में जीवन संघर्ष के कई आयाम देखने को मिलते हैं, जिनमें विस्थापन के अतिरिक्त अकेलापन, आर्थिक पक्ष, स्त्री संघर्ष आदि कई विषय हैं जो उनको दूसरे कहानीकारों से अलग खड़ा करते हैं। 'खिड़की' उनकी एक अनाम साठ वर्षीय पुरुष की कहानी है जो अकेला हैं पत्नी की अकाल मृत्यु हो गई और पुत्र-पुत्री दूर रहते हैं। वह अकेला स्वयं का खाना खुद ही बनाकर एक ही तरह का जीवन जीने को अभिशप्त है। जहाँ नौकरी करता है वह वहाँ अपनी उम्र के लोगों को देखता है जो उसे उसके जैसे ही अकेलेपन के शिकार लगते हैं। उनका दर्द उसे अपने सा लगता है। वह अपनी 'खिड़की' जिससे टिकट देने का काम करता है उसे दोस्ती का साधन बना लेता है—"दर्द सबका एक ही सा....टीस उठती....हैरानी भी होती है कि सबकी समस्या एक सी क्यों है? यह अकेलापन किसी मज़हब, किसी जाति, किसी समुदाय का मोहताज नहीं होता।"

बेहतर जिंदगी के लिए विदेश गए सभी लोगों को बेहतर जीवन ही मिले यह जरूरी तो नहीं। अधिकांश तो ठीक-ठाक जीवन ही जी पाते हैं। 'बेतरतीब जिंदगी' कहानी में तेजेन्द्र ने उस शायर के दर्द को बयाँ किया है जो अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने विदेश आया है। शायर है, हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही अच्छी बोल लेता है फिर भी ब्रिटेन में उसका पेट पालना मुश्किल हो रहा है। उसे हमेशा लगता है कि—"मैं जब भारत में था अमीर आदमी था, यहाँ विलायत में आकर गरीब हो गया हूँ।

भारत में पैसा कम था पर उसकी कला का सम्मान तो था। यहाँ ब्रिटेन में दौलत खानों के बीच उसकी कला वेश्या से ज्यादा नहीं है।

तेजेन्द्र ने अपनी कहानियों में स्त्री संघर्ष को भी स्थान दिया है। उनकी कहानियों में स्त्रियों के संघर्ष उम्र के अलग-अलग पड़ाव पर दिखाई देते हैं। 'टेलीफोन

लाइन' में सोफिया के संघर्ष की कहानी है। सोफिया की शादी जल्दी हुई और बच्चे भी जल्दी-जल्दी हो गए। दो बच्चों के बाद उसका पति उसे छोड़ गया। दोनों बेटियों को प्राइवेट नौकरी कर पाल रही है। बेटी की शादी भी यह सोचकर कर दी कि मनहूस बाप का साया न पड़े लेकिन संघर्ष यहाँ कम न हुआ। बेटी का पति आतंकवादी निकला और पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया। वह अपने पुराने स्कूल के दोस्त जो लंदन में बसा है उससे बात करती है टेलीफोन पर। वह चाहती है उसकी बेटी को अवतार लंदन में सेट कर दे। अवतार पूछता है कैसे मद्द करे सोफी कहती है—"तुम मेरी बात सुनो....तुम मेरे दोस्त हो....तुम तो मुझसे प्यार भी करते थे....तुम खुद ही मेरी बेटी से शादी क्यों नहीं कर लेते?"

कैसी मजबूरी है, कैसी आर्थिक परेशानी है कि एक स्त्री उस पुरुष से अपनी बेटी का विवाह करना चाहती है जो उससे प्रेम करता था किन्तु अवतार के लिए उसकी बेटी का हाथ थामना पाप से कम नहीं लगता है।

'फ्रेम के बाहर' एक ऐसी लड़की के संघर्ष की कथा है जहाँ जब वह अकेली थी तो माता-पिता का पूरा ध्यान उस पर था लेकिन बेटी के बाद बेटा पैदा होने से माँ नेहा को समय नहीं दे पाती। पहले उसकी हर फरमाइश एक बार में पूरी होती थी। माता-पिता पूरा समय उसको देते थे लेकिन अब वही उसे हॉस्टल भेज देते हैं। इसका नेहा पर इतना बुरा असर होता है कि नेहा फिर कभी घर नहीं आती। पिता को लगता भी है कि ठीक नहीं किया हॉस्टल भेजकर—"उसे हॉस्टल भेजकर शायद हमने उसे एक अलग संसार में भेज दिया है।....मैं उस दुनिया से वापस आने का रास्ता देख नहीं पा रहा हूँ।"

इस कहानी में तेजेन्द्र के बालमनोविज्ञान की अभिव्यक्ति बहुत सटीक है। यह कहानी मन्नू भण्डारी के 'आपका बंटी' की याद दिला देता है।

तेजेन्द्र की 'एक बार फिर होली' कहानी भी नज़मा के एकांकी जीवन के संघर्ष को अभिव्यक्त करती है। विवाह कर कराची भेज माँ-बाप तो उससे मुक्त हो जाते हैं, लेकिन नए देश, नए घर में उसे सामंजस्य बैठाने में बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। उसके ससुराल वाले,पति सब चाहते हैं कि वो हिन्दुस्तान में बिताये जीवन को भूल जाए। हिंदी के बजाय उर्दू में लिखे। वहाँ के रीति-रिवाजों के बजाय यहाँ के रीति-रिवाजों को अपनाए। जबकि नज़मा अपने देश के गाँव, मिट्टी की सुगंध और होली-दिवाली जैसे पर्वों को न तो भूलती है न भूलना चाहती है। लेकिन उसके सौहर की कड़वी बातें उसे सालती हैं—"चुभती बातें, कटु वचन, हर वक्त याद दिलाया जाना कि वह हिन्दुस्तान की यादों से बाहर आये।"

नज़मा को सब पराया लगता है, पराया देश, पराए लोग यहाँ तक की पति भी पराया। वह प्रत्येक क्षण संघर्ष करती रहती है अपनों के साथ। चाह कर भी कोई कोमल तंतु नज़मा को इमरान से नहीं जोड़ पाया। सालों साथ रहने पर भी दोनों के बीच विश्वास की कमी ही रही।

तेजेन्द्र ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन के हर पक्ष को देखा है। 'मलवे की मालकिन' कहानी ऐसी स्त्री की कहानी है जो बेटी को जन्म देने के कारण घर से निकाल दी गई। घरवालों ने पहले तो यह कह कर अधिक नहीं पढ़ने दिया कि लड़की अधिक पढ़ गई तो लड़का कहाँ से मिलेगा। जिस घर में विवाह कर भेजी गई वहाँ अमिता सिर्फ श्रीमती यादव थी। दिनभर गरीब बैल की तरह जुटी रहती कामों में। किसी को लगाव नहीं उससे। अमिता के जीवन का संघर्ष विवाह के पूर्व ही शुरू हो गया था। लाख बातें बराबरी की कर ले, लेकिन लड़का और लड़की का भेद कहाँ मिट पाया है। जैसी ही अमिता के लड़की हुई लक्ष्मी के पुजारी ससुराल वाले सहन ही न कर सके लक्ष्मी को। तुरंत निर्णय कर दिया—"इस परिवार को तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। अपनी मनहूस सूरत और उससे भी अधिक मनहूस बेटी को उठाओ और यहाँ से दफा हो जाओ।"

अकेली स्त्री अपनी बेटी को ले जीवन के नये रास्ते खोजने निकलती है। अपनी जज्बे से जीवन को नये सिरे से जीना शुरू करती है और अपनी बेटी को पालने में ही अपना जीवन लगा देती है। अपने पति से मिले दर्द और बेइज्जती उसे किसी पुरुष पर विश्वास नहीं करने देते।

तेजेन्द्र की कहानियों में स्त्रियों का संघर्ष भिन्न-भिन्न स्तर पर दिखाई देता है। कभी वह घरेलू हिंसा की शिकार है, तो कहीं कम पढ़ी-लिखी होने का खामियाजा भुगतती दिखाई देती है। कहीं अपने पति के गुनाहों की सजा भोगती दिखाई देती है।

"ज़मीन भुरभुरी क्यों है..... ?" की कोकिला बेन अपने पति के द्वारा किए गए गबन का कष्ट भोगती है। पति के 'गिल्टी' कह देने से उसे तीन साल की कैद हो जाती है। कोकिला समझ नहीं पाती कि वह इन तीन सालों में कैसे घर चलाएगी, कैसे बच्चों को सम्भालेगी। फिर भी वह सब करती है, जो नहीं जानती थी, वह सब सीखती है। वह सोचती है कि अब उसे भीतर से मजबूत बनना होगा, और वह बनती है। पति जेल में है जिसके कुछ कायदे हैं जो सभी कैदियों को मानने हैं। सुबह एक्सरसाइज फिर नाश्ता और फिर कम्प्यूटर क्लास। इस दिनचर्या में राजन ढल गया और जवान हो गया। उसका निकला पेट पिचक गया, और चेहरे पर रौनक आ गई। वहीं जिसने कोई गुनाह नहीं किया, कोकिला अपने को आईने में देखती है—"सफेद बाल, चेहरे पर चिंता की छपी रेखाएँ और थकावट जैसे टूट गई थी वह।"

कोकिला सोचती है कि जज ने कैसा फैसला सुनाया, मुजरिम तो राजन था लेकिन सजा उसे मिली—"मेरा क्या कसूर था ? मुझे क्या सजा मिली ? मेरे हिस्से में सिवाय संघर्ष और दु:खों के और क्या रहा।"[17]

तेजेन्द्र की कहानियों में जीवन की जटिलताएँ बदली जीवनशैली और इस शैली से आए कष्टों का भी सजीव चित्रण है। 'कैंसर' कहानी आज के युग का एक भयावह चित्र प्रस्तुत करती है। छोटी उम्र में ही पूनम ब्रेस्ट कैंसर की शिकार हो जाती है। एकाकी परिवार में रहने से कोई आस-पास नहीं है। बच्चों और पति की देखरेख कौन करे। उसका खुद का ख्याल कौन रखे। इन चिंताओं के साथ ही चिंता है अपने एक अंग को खोने के बाद कैसे रहेगी। नरेन पूनम को बेहद प्यार करता है, वह उसे समझा देना चाहता है कि एक छाती के साथ भी पूनम मेरे लिए उतनी ही आकर्षक, प्यारी और जरूरी होगी।"

चाहकर भी हम कहीं-कहीं हालात से हार जाते हैं। कैंसर आज बहुत फैल गया है। पहले इस बीमारी का नाम कभी-कभी, कहीं-कहीं सुनते थे किंतु आज तो बाजारवादी युग में कैंसर जैसी बीमारी का भी बीमा होने लगा है। बीमा कंपनियों ने विभिन्न प्रकार के कैंसर रोगों के लिए अलग-अलग पॉलिसी बाजार में उतार दी है। तेजेन्द्र ने इस बदलाव को भी देखा और अपनी कहानियों में व्यक्त किया।

तेजेन्द्र ने अपनी कहानियों में कुछ नये विषयों पर भी लिखा। आज की उपभोक्तावादी संस्कृति ने नैतिक मूल्यों को बिल्कुल भुला दिया है। व्यक्ति की सोच सिर्फ पैसा कमाने की है और उसका शैतान दिमाग हर समय दो की चार करने का प्रयास करता रहता है। नैतिक मूल्य जब हममें नहीं हैं तो अगली पीढ़ी को क्या देंगे। शायद यही डर 'कब्र का मुनाफा' के खलील को है। खलील अपने और अपनी पत्नी के लिए कब्र बुक करवा लेता है ताकि—"कम-से-कम हमारे बच्चे हमें दफनाते वक्त अपनी जेबों की तरफ नहीं देखेंगे।"

क्या वाकई ऐसा समय आ रहा है कि हमें अपने मरने और उसके बाद तक का इंतजाम करके जाना होगा। मैत्रेयी जी ने भूमिका में बहुत सही लिखा है—"हमारे बच्चे या मित्र अथवा नाते रिश्तेदार क्या अब इतने बेमुरव्वत, बेगाने या खुदपरस्त हो गए कि आखिरी विदा का इंतजाम भी हमें ही करके जाना होगा।"

कहानीकार ने दुनिया को बेपर्दा कर दिया है। अब कब्र को भी मुनाफे का व्यापार कहा जाने लगा है। इसका भी विज्ञापन दिया जाने लगा है कि मरने के बाद नहलाकर अच्छे कपड़े पहनाए जायेंगे, बड़ी कार में आपकी लाश लायेंगे। दिखावे की कोई हद तो होगी। जीते जी तो हम दुनिया के आगे दिखावा करते ही हैं क्या मरने पर भी

यही करेंगे। तेजेन्द्र ने बहुत अहम और सटीक प्रश्न इस कहानी के माध्यम से उठाया है।

अत: कहा जा सकता है कि तेजेन्द्र की कहानियों का विषय फलक व्यापक है। वे विभिन्न विषयों को अपनी कहानियों में लेते हैं उनकी कहानियाँ सिर्फ घटनाओं का कथन नहीं करती बल्कि एक संदेश भी देती है। वे ये मानते हैं कि जीवन में सिर्फ पैसा ही महत्वपूर्ण नहीं क्योंकि पैसा कभी भी प्यार की भरपाई नहीं कर सकता। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में लंदन में रह रहे भारतीयों के जीवन की गहरी तस्वीर नजर आती है। वे खुद भारत में जन्मे, पले-बड़े और जीविकोपार्जन के लिए लंदन गए तथा वहीं बस गए। उन्होंने दोनों देशों के समाज को बहुत करीब से देखा और जिया। इसीलिए भी वे अपने अनुभवों को कहानियों में बेहतर ढंग से कह पाए। उन्होंने कहानियाँ कही भी उसी भाषा में जैसे पात्र रचे गए। वे सहज और सरल भाषा में अपनी बात कहते हैं। इनकी भाषा प्रभावकारी है, कहीं क्लिष्टता या गरिष्ठता दिखाई नहीं देती। वे अपनी बात को बहुत अच्छे से संप्रेषित करते हैं। यही इनकी कहानियों की सफलता भी है। वे शब्दों के जादू से चमत्कार नहीं करते बल्कि अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठक के हृदय में स्थान बनाते चलते हैं। प्रवासी साहित्य में तेजेन्द्र शर्मा का स्थान निश्चित ही विशिष्ट है।

संदर्भ-ग्रंथ

1. संध्या चौरसिया, प्रवासी साहित्य और उपन्यासकार उषा प्रियमवदा, विभोम स्वर, अप्रैल-जून-2017 पृष्ठ सं. 55
2. नीलाक्षी फूकन, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा, विभोम स्वर, अप्रैल-जून-2017 पृष्ठ सं. 49
3. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 62
4. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 206
5. वहीं, पृष्ठ सं. 207
6. वहीं पृष्ठ सं. 213
7. सुबोध शर्मा, प्रवासी हिंदी कथा साहित्य: वृद्ध एवं स्त्रियाँ, विभोम स्वर, जुलाई-सितंबर-2017, पृष्ठ सं. 56
8. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 183
9. वहीं, पृष्ठ सं. 184

10. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 50

11. वहीं, पृष्ठ सं. 187

12. वहीं, पृष्ठ सं. 76

13. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 202

14. वहीं, पृष्ठ सं. 127

15. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 224

16. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 245

17. वहीं, पृष्ठ सं. 163

18. तेजेन्द्र शर्मा की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ सं. 247

19. वहीं, पृष्ठ सं. 08

20. तेजेन्द्र शर्मा, तेजेन्द्र शर्मा श्रेष्ठ कहानियाँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, प्रथम संस्करण– 2015।

21. विभोम स्वर, पत्रिका, अप्रैल-जून-2017, आई. एस. एन. नं. 24559814

22. विभोम स्वर, पत्रिका, जुलाई-सितंबर-2017, आई. एस. एन. नं. 24559814।

❑❑